ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 554-556
www.allresearchjournal.com
Received: 23-06-2017
Accepted: 29-07-2017

डॉ. अनिता देवी
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Correspondence
डॉ. अनिता देवी
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रसाद का नाट्य – साहित्य: एक सुधारवादी संकल्प

डॉ. अनिता देवी

जय शंकर प्रसाद महान लेखक हैं| वे एक महान कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं निबंधकार हैं | आंसू, झरना, लहर और कामायनी को हिंदी काव्य- साहित्य में शीर्ष स्थान प्राप्त है, जानकी वल्लभ शास्त्री उनके काव्य की विशेषता बताते हुए लिखते हैं-" जीवन की सम्पूर्णता में उपलब्धि प्रसाद के काव्य की विशेषता है | जैसे भरी गागर नहीं छलकती वैसे ही पूर्व वाणी में उत्तेजना नहीं होती | यहाँ ईर्ष्या भक्ति में, घृणा श्रृद्धा में क्रोध शांति में परिणिति प्राप्त कर लेते हैं|"[१] कहानियों में ग्राम, रसिया बालम, प्रतिध्वनि, पुरस्कार का अपना स्थान है | कंकाल, तितली यथार्थवाद की जमीन पर लिखे गए उपन्यास हैं | उनके निबंध भी आलोचना के क्षेत्र में अपनी खास भूमिका निभाते हैं | जब हम नाटकों की बात करते हैं तो हिंदी साहित्य में उनका नाट्य साहित्य बेजोड़ और अदभुत है | प्रसिद्ध आलोचक नंददुलारे वाजपेयी लिखते हैं- "प्रसाद के नाटक हमारे नाटय इतिहास में सम्मानित स्थान के अधिकारी हैं | अपने पूर्व से चली आती हुई पारसी रंगमंच की परम्परा और भारतेंदु युगीन नाट्य कला की पृष्ठ भूमि पर उन्होंने जो विशिष्ट निर्माण किया है, उसकी विकास प्रक्रिया उनके नाट्य साहित्य में अंकित है |"[२] उनके नाटक ऐतिहासिक कथानक के आवरण में तत्कालीन युगबोध को व्यक्त करते हैं | वे अपने नाटकों में मानवतावाद, राष्ट्रीय चेतना, जनतान्त्रिक मूल्यों पर आधारित शासन की परैवी करते हैं| उनके नाटकों में समानता, स्वतंत्रता और जातीय एकता का भाव कूट-कूट कर भरा है | धर्म के वास्तविक स्वरुप की व्याख्या, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और पात्रों के द्वारा विश्वमैत्री की स्थापना, नाटकों में ऐतिहासिक और काल्पनिक पात्रों की रचना, आधुनिक युग की परिस्थितियों को देखते हुए भारतीय इतिहास के विशेष कालखंडों का चुनाव, नारी-पुरुष समानता एवं स्वतंत्रता, नाटकों में भारतीय सनातन मूल्यों और उच्च संस्कृति का चित्रण एवं रक्षा, प्रत्येक नाटक के रूप में एक नया प्रयोग आदि अनेक ऐसी बातें हैं जो प्रसाद के आधुनिकता बोध को ही दर्शाते हैं |

प्रसाद ने अपने नाटकों में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक दृष्टि से एक स्वस्थ समाज और एक आदर्श शासन व्यवस्था की कल्पना की है | उनके नाट्य साहित्य में उनका व्यष्टिगत और समष्टिगत परिष्कार का सुधारवादी संकल्प प्रकट हुआ है | यह सुधार वे विभिन्न क्षेत्रों में करना चाहते हैं | उनका मानना है कि मनुष्य तो साधारण धर्मा पशु है, जो निस्वार्थ कर्म से देवता भी बन सकता है | मनुष्य महत्त्वाकांक्षी होता है और महत्त्वाकांक्षा के दाव पर कभी – कभी मनुष्यता घर कर जाती है इसलिए जीवक बुद्धि की इसी महत्त्वाकांक्षा को प्रकट करता हुआ कहता है – "बुद्धि देव की प्रतिद्वंद्विता ने उसे अँधा कर दिया है – महत्त्वाकांक्षा उसे एक गर्त में गिरा रही है| उसकी वह आशा तब तक सफल न होगी, जब तक आप जीवित रहकर गौतम की प्रतिष्ठा बढ़ाते रहेंगे और उनकी सहायता करते रहेंगे |" ३ प्रसाद ने कुपात्रों के कुत्सित कार्यों को दिखाया है, उनकी गलत मानसिकता का परिणाम समाज को भुगतना पड़ता है | लेकिन ऐसे पात्रों का हृदय परिवर्तन कर सही मार्ग पर लाया जा सकता है | जब उंतक से प्रतिशोध लेने की ज्वाला में जल रही दामिनी गलत रास्ता अपनाती है तब उसका जो संवाद है वह मानो मनुष्य जाति को समझाने हेतु प्रसाद खुद उपस्थित हो गए हो – " क्या ये सब मनुष्य हैं ..... भयानक से भयानक काम करने में भी इन्हें तनिक भी रूकावट नहीं .....मनुष्य जब एक बार पाप के नाग पाश में फंसता है, तब वह उसी में और भी लिपटता चला जाता है |पापों की श्रंखला बनती चली जाती है .....|" ३ जब मद्यप अश्वसेन की दृष्टि दामिनी पर पड़ती है तो वह मनुष्यता का वास्तविक अर्थ ही भूल जाता है – "सुन्दरी, मैं मनुष्य हूँ | मेरी समझ में यही मनुष्यता है कि रमणीय प्रलोभन और भयानक सौन्दर्य के सामने घुटने टेक दूँ | तुम भय और आश्चर्य से पाप का नाम लेकर मुझे डरा न सकोगी | मैं पाप और पुण्य की सीमा पर खड़ा हूँ |"[३] ऐसे में मणिमाला आकर दामिनी को बचाती है और अश्वसेन को जातीय अस्मिता का पाठ पढ़ाती है | आज वर्तमान समय में भी न जाने कितनी घटनाएँ घट रही हैं,

अत: मनुष्य जाति को लगातार स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करने की आवश्यकता है | स्कंदगुप्त में कमला मनुष्यता को बचाने का बीड़ा उठाती है | वह स्कंदगुप्त को परमात्मा का संबल लेकर अच्छे कर्म करने की सीख देती हुई कहती है - कि "जो अपने कर्मो को ईश्वर का कर्म समझ कर करता है, वही ईश्वर का अवतार है |"[४] उस समय की जनता समाज के बारे में एवं अपने अधिकारों के प्रति उदासीन थी/ इसीलिए समाज में हो रहे परिवर्तन की ओर प्रसाद जी जनता का ध्यान ले जाना चाहते थे स्कंद्गुत नाटक में पर्णदत्त कहता है – "अपने अधिकारों के प्रति आपकी उदासीनता और अयोध्या में नित्य नये परिवर्तन |"५ जनता की उदासीनता को देखकर प्रसाद चिंतित हैं | "युवराज ! इसीलिए मैंने कहा था कि आप अपने अधिकारों के प्रति उदासीन हैं, जिसकी मुझे बड़ी चिंता है |"[५] प्रसाद ने चाहा कि हमें अपने अधिकारों को लेने के लिए अगर लड़ाई करनी पड़े तो वह भी करनी चाहिए /जब कुमार गुप्त मौर्य साम्राज्य के इतिहास की बात करता है तो धातु सेन कहता है- "नहीं धर्मावतार ! समझ में तो इतनी बात आ गयी कि लड़कर ले लेना ही एक प्रधान स्वत्व है | संसार में इसी का बोलबाला है |"[५] अत: हमें अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहना चाहिए | क्योंकि रोने और भीख मांगने से हमें अधिकार नहीं मिलते | केवल खाने और सोने की चिंता करना मनुष्य का काम नहीं है इतना तो पशु भी सोच लेते हैं | संसार में क्या इतनी ही वस्तुएं विचारने की हैं ? पशु भी इनकी चिंता कर लेते हैं | प्रसाद ने आपसी अंतर्विद्रोह का विरोध किया है | इसलिए अजातशत्रु में गौतम बिंबसार को यही सब समझाता हुआ कहता है –"राजन समझ लो – इस गृह- विवाद और आंतरिक झगड़ों से विश्राम लो |" ३०इस प्रकार वे आपस की नफरत को मिटाकर शांति की स्थापना करना चाहते हैं और चाहते हैं कि हम सब एक होकर देश की रक्षा करें | उन्हें चारों ओर विपल्व का साम्राज्य दिखाई दे रहा है और जिसमें निरह भारतीयों की घोर दुर्दशा है | भारतीयों की दशा में सुधार के लिए वे भगवान् से प्रार्थना भी करते हैं |" ६

वे रिश्वत देकर विजय खरीदना देश की वीरता के प्रतिकूल मानते हैं | वे केवल अपने देश में ही शांति नहीं चाहते बल्कि वे तो पूरे विश्व में शांति का वातावरण चाहते हैं | इसलिए गौतम ने व्यंग्य को उपद्रवों का मूल मानकर वाक् संयम को विश्व मैत्री की पहली सीढ़ी कहा है इस प्रकार प्रसाद केवल देश में ही नहीं विश्व में शांति और कल्याण की कामना करते हैं | वे देश के लिए प्राण न्यौछावर करने की बात करते हैं – " राष्ट्र के कल्याण के लिए प्राणों तक का विसर्जन किया जा सकता है|" ७ इस घरती को एक सुंदर उद्यान की तरह मानते हैं और वे इस उद्यान को रक्त-रंजित होने से बचाना चाहते हैं वे चाहते है की पूरा विश्व एक परिवार की तरह हो जिसके सभी सदस्य एक दुसरे को स्नेह करें और पूरा मानव समाज सुखी हो | किसी में भी छोटे-बड़े का भेदभाव न हो | जाति को लेकर अन्तर न किया जाए सभी मनुष्य केवल मनुष्य हैं चाहे वो किसी दासी की संतान हो या महारानी की | इसलिए हमें अन्धविश्वासों का विरोध करना चाहिए | उन्हें समाज से खत्म करना ही होगा इसके साथ साथ हमें कर्म पथ पर अग्रसर होना चाहिए | गौतम ने लोगो को सन्देश दिया है "भूमंडल पर स्नेह का, करुणा का, क्षमा का शासन फैलाओं | प्राणीमात्र में सहानुभूति को विस्तृत करो इन क्षुद्र विप्लवों से चौक कर अपने कर्म-पथ से च्युत न हो जाओ|"[८] गौतम और प्रेमानंद की बातों में हमें गाँधी जी के सिद्धांतों की झलक मिलती है | हम गौतम के विचारों के रूप में प्रसाद के विचारों से भी अवगत हो सकते हैं | गौतम पुरे विश्व में शांति और पूरे विश्व का कल्याण चाहते हैं | गौतम बिंबसार को समझाते हुए कहते हैं- "राजन ! कोई किसी को अनुग्रहित नहीं कर सकता | विश्वभर में यदि कुछ कर सकती है तो वह करुणा ही है, जो प्राणीमात्र में समदृष्टि रखती है |-

'गोधूली के राग पटल में स्नेहांचल फहराती है |
स्निग्ध उषा के शुभ्र गगन में हास-विलास दिखाती है
मुग्ध मधुर बालक के मुख पर चंद्रकांति बरसाती है
निर्निमेष ताराओं से वह ओस-बूंद भार लाती है
निष्ठुर आदि-सृष्टि पशुओं की विजित हुई इस करुणा से
मानव का महत्त्व जगती पर फैला अरुणा करुणा से' [९]

प्रसाद का मानना है कि अर्थ–निग्रह करके व्यावहारिकता की रक्षा सफलता है | जन्मेजय का नागयज्ञ के महर्षि च्यवन ने सोम्श्वा को सचेत किया है कि "वत्स! ऐसा काम करना जिससे दुरात्मा काश्यप ने ब्राहमणों की जो विडम्बना की है, वह सब घुल जाये और सब पर ब्राहमणों की सच्ची महत्ता प्रकट हो जाये अध्यात्म गुरु जब तक अपना सच्चा स्वरूप नहीं दिखालावेंगे, तब तक दुसरे का भला कैसे धर्माचरण करेंगे | त्याग का महत्त्व, जो हम ब्राह्मणों का गौरव है, सदैव स्मरण रहे | धर्म कभी धन के लिए न आचरित हो, वह श्रेय के लिए हो, प्रकृति के कल्याण के लिए हो, और धर्म के लिए हो| यही धर्म हम तपोधनों का परम धन है |"[१०] प्रसाद ने प्रायश्चित का यही एक मात्र मार्ग निकला है कि यदि अतीत के कुटिल कर्मों के प्रति वर्तमान में रमणीय कार्य किये जाये तो भविष्य भी समुज्जवल हो सकता है समसामयिक जीवन की दैनन्दिन घटनाओं से प्रेरणा ग्रहण करके प्रसाद ने साम्प्रदायिक सघर्षों की ओर दृष्टिपात किया है | साथ ही धर्मिक मतभेदों का सुधारवादी समन्वय अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है| स्कंदगुप्त नाटक का पात्र धातुसेन गौतम के विश्वत्म्वाद की दार्शनिक उत्पति सिद्ध करके ब्राह्मणों और बौद्धों का द्वंद्व समाप्त करता है| धातुसेन ब्राह्मण को संबोधित करता हुआ कहता है ....."क्षत्रिय राजा ....धर्म का पालन करने वाला राजा पृथ्वी पर क्यों नहीं रह गया? आपने इसे विचारा है? क्यों ब्राह्मण टुकड़ों के लिए ऐसे लोगों की उपजीविका छीन रहे हैं | क्यों एक वर्ग के लोग दूसरों की अर्थकारी वृतियां ग्रहण करने लगे हैं | लोभ ने तुम्हारे धर्म का व्यवसाय चला दिया | दृक्षिणाओं की योग्यता से - स्वर्ग, पुत्र, धर्म, यश, विजय और मोक्ष तुम बेचने लगे | कामना से अंधी जनता के विलासी-समुदाय के ढोंग के लिए तुम्हारा धर्म आवरण हो गया है| जिस धर्म के आचरण के लिए पुष्कल स्वर्ण चाहिए, वह धर्म जनसाधारण की संपति नहीं | धर्म वृक्ष के चारों ओर स्वर्ण के कांटेदार जाल फैलाये गए हैं | और व्यवसाय की ज्वाला से वह दग्ध हो रहा है| जिन धनवानों के लिए तुमने धर्म को सुरक्षित रखा, उन्होंने समझा कि धर्म को धन से ख़रीदा जा सकता है, इसलिए धनोपार्जन मुख्य हुआ और धर्म गौण |"[११] चन्द्रगुप्त में चाणक्य भी यही भविष्यवाणी करता है कि - "यवन आक्रमणकारी बौद्ध और ब्राह्मण का भेद न रखेंगे |"[१२] प्रसाद का मानना है की जैसा राजा वैसी प्रजा इसलिए राजा को प्रजा के सामने एक आदर्श उपस्थित करना चाहिए, विशाख में प्रेमानंद राजा नरदेव को प्रजा हितैषी बनने की आज्ञा देता है –"शासक के आचरण ऐसे होने चाहिए जिससे प्रजा को उत्तम आदर्श मिले, प्रजा में दया आदि सद्गुणों का प्रचार हो |"[१३] प्रसाद ने इस दिशा में पुरातनवाद का आश्रय लिया गया है और वर्तमान के यथार्थ स्वरूप को उसके परिपार्श्व में रखकर सुधारने की प्रेरणा दी है |

प्रसाद स्मष्टिमुलक भावना के समर्थक थे, परन्तु कुछ असामान्य पात्र ऐसे भी हैं जो अपनी व्यैक्तिक विचारधारा के लिए प्रख्यात हैं | चाणक्य का उद्धत ब्राह्मणत्व प्रत्येक स्थल पर जाज्वल्यमान है| वे चंदागुप्त नाटक में कहते हैं".....महाराज! धर्म के नियामक ब्राह्मण हैं, मुझे पात्र देखकर उसका संस्कार करने का अधिकार है | ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम शाश्वत बुद्धि- वैभव है वह अपनी रक्षा के लिए, पुष्टि के लिए और सेवा के लिए इतर वर्णों का संगठन कर लेगा|"[१४] इसके अतिरिक्त चाणक्य बड़े ही साहसपूर्वक कहता है कि राष्ट्र का सुचिंतन केवल ब्राह्मण ही कर सकता हैं | क्योंकि –

"ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है, न किसी के अन्न से पलता है| स्वराज्य में विचरता है और अमृत होकर जीता है | ब्राह्मण सब कुछ सामर्थ्य रखने पर भी स्वेच्छा से इन माया–स्तूपों को ठुकरा देता है प्रकृति के कल्याण के लिए अपने ज्ञान का दान देता है |"[१६] चाणक्य स्वयं भी एक ब्राह्मण हैं और जो ब्राह्मण अपने ब्राह्मणत्व के नाम पर कलंक है वे उन्हें फटकार लगाते हुए कहते हैं – "भिक्षा जीवी ब्राह्मण ! क्या बौद्धों का संग करते-करते तुम्हें अपनी गरिमा का सम्पूर्ण विस्मरण हो गया ? चाटुकारों के समान हाँ में हाँ मिलाकर, जीवन की कठिनाइयों से बचकर मुझे भी कुत्ते का पाठ पढ़ाना चाहते हो | भूलो मत, यदि राक्षस देवता हो जाये तो उसका विरोध करने के लिए मुझे ब्राह्मण से दैत्य बनना पड़ेगा|"[१७] चाणक्य ने ब्राहमण की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उनके लिए आदर्श की स्थापना करते हुए कहा है–"ब्राह्मण एक मेघ के समान मुक्त वर्षा–सा जीवनदान, सूर्य के समान अबाध आलोक विकीर्ण करना, सागर के समान कामना नदियों को पचाते हुए सीमा के बाहर न जाना, यही तो ब्राह्मणत्व का आदर्श है|"[१८] अंत में उसे अपने अंतर्निहित शुद्ध निरभिमान ब्राह्मणत्व का चिदाभास होता है | अशान्तिपूर्ण मन:स्थिति में वह उग्र पश्चाताप करता हुआ कहता है कि –"मैं ब्राह्मण हूँ मेरा साम्राज्य करुणा का था| मेरा धर्म प्रेम का था| आनंद समुद्र में शांति-द्वीप का अधिवासी मैं, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र मेरे द्वीप थे, अनंत आकाश वितान था| शस्य श्यामला कोमल विश्वम्भरा मेरी शय्या थी| बौद्धिक विनोद कर्म था, संतोष धन था|"[१९] इस प्रचंड आत्मज्ञान की वैयक्तिक धारणा ही उसे वैराग्य द्वारा आत्मशुद्धि के लिए अंततः प्रेरित करती है| वैचारिक सुधार भावना नारी-जीवन के संदर्भ में और अधिक मुखर हुई है |

प्रसाद में अपने नाटकों में नारी और प्रकृति को बहुत ऊँचा स्थान प्रदान किया है | डॉ. रामेश्वर लाल खंडेलवाल लिखते हैं- "वे मानव जीवन को विश्व आत्मा का ही अंश होने के नाते प्रकृति से रहित कहीं भी नहीं देख पाते प्रकृति उनकी मानवीय सृष्टि की अनिवार्य संगिनी है/'११ प्रसाद ने अधिकतर ऐतिहासिक नाटक लिखे | लेकिन उनके ऐतिहासिक नाटकों के कथानकों को देखते हुए कहा जा सकता है कि उनमें भारतीय संस्कृति और तत्कालीन समय की समस्याएँ सामान्तर चलती रही है | शम्भुनाथ जी लिखते है-" चूँकि प्रसाद ने इतिहास को संस्कृति से जोड़कर देखा है, बौद्ध धर्म का युग धर्म -सापेक्ष चित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने समाज में व्याप्त क्रूरता, निर्दयता, आदि को करुणा एवं अंहिसा से पराजित दिखाया |" १२ प्राचीन काल में स्त्रियों का बहुत आदर-सम्मान किया जाता था, उनकी शासन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती थी | जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सांझीदारी तो रहती थी परन्तु उन्हें किसी प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी | उनके बाहर आने-जाने पर कठोर नियंत्रण था| इसीलिए प्रसाद ने नारी जाति को वह स्वतंत्रता प्रदान कर उसे समाज में उच्च स्थान पर बिठाया है| उनके नाटकों में नारी पत्र घर की चार दिवारी में बंद होकर नहीं रहते बल्कि ये नारी पात्र चाहे युद्ध हो या को भी सामाजिक क्षेत्र सबमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| इसके पीछे एक कारण यह भी था कि प्रसाद आधुनिक काल के साहित्यकार थे| आधुनिक काल में महिलाएं स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ–साथ मंच पर आकर राष्ट्रीय आन्दोलन में भी भाग ले रही थी| प्रसाद की देवसेना, कल्याणी, अलका, ध्रुवस्वामिनी, अनंत देवी, जयमाला एवं राज्यश्री आदि महिलाएं उस काल का आदर्श हमारे सम्मुख रखने के लिए आज भी यथेष्ट हैं| एक ओर भारतीय नारीत्व का आदर्श उपस्थित करने वाली महिमामयी मल्लिका हैं तो दूसरी ओर नई परिस्थितियों में अपने पति से संबंध विच्छेद करने वाली ध्रुवस्वामिनी| इस युग की मांग को प्रसाद जैसे मनीषी ने शास्त्रों द्वारा अनुमोदित सिद्ध करके बल प्रदान किया है | उनके सभी नाटकों में जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, अजातशत्रु, राज्यश्री, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे नाटक भारतीय समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं | प्रसाद ने वैधव्य-दुःख को नारी के लिए अभिशाप माना है| "यह वैधव्य –दुःख नारी जाति के लिए कैसा कठोर अभिशाप हैं, किसी भी स्त्री को इसका अनुभव न करना पड़े |" [२०] बिंबसार का मन संसार में व्याप्त छल कपट, विद्रोह आदि के समाचार सुन-सुन कर व्यथित हो गया है वे जीवक को कहते हैं- अब कोई समाचार सुनने की इच्छा नहीं है | संसार-भर में विद्रोह, संघर्ष, हत्या, अभियोग, षढयंत्र और प्रतारणा है|"[२१] इस प्रकार प्रसाद ने समाज, राजनीति, धर्म, जाति आदि सभी को लेकर एक सकारात्मक सोच के साथ सुधार की बात की है | उनके दिखाएँ रास्ते पर चल कर हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं |

संदर्भ

1. प्रसाद का साहित्य, पृष्ठ सं -३७, संपादक – अरुणाकर पांडे
2. प्रसाद का साहित्य, पृष्ठ सं -११०, संपादक – अरुणाकर पांडे
3. अजातशत्रु, ३८, जन्मेजय का नाग यज्ञ, ५४,
4. स्कंदगुप्त, १३९
5. स्कंदगुप्त, ३८, ४२
6. अजातशत्रु, ३०
7. अजातशत्रु, २७
8. अजातशत्रु, ५५
9. अजातशत्रु, २८
10. जन्मेजय का नाग यज्ञ, ६१
11. स्कंदगुप्त, १३२, भारतीय नाट्य साहित्य, संपादक – डॉ. नगेन्द्र
12. चन्द्रगुप्त, ६५ राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और प्रसाद, पृष्ठ सं – २२५, संपादक – शम्भुनाथ
13. विशाख, 30
14. कक्ककक
15. जजक
16. चन्द्रगुप्त, ४८
17. चंद्र गुप्त, ७१
18. चंद्र गुप्त, ७७
19. चंद्र गुप्त, १५९
20. अजातशत्रु, ६७
21. अजातशत्रु, ७६